एम.एच.डी.-15

हिन्दी में स्नातकोत्तर उपाधि (एम.ए. हिन्दी)

सत्रांत परीक्षा

एम.एच.डी.-15 : हिन्दी उपन्यास–2

समय : 2 घण्टे *अधिकतम अंक : 50*

नोटः प्रथम प्रश्न अनिवार्य है। शेष में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिये।

1. निम्नलिखित गद्यांशों में से किन्हीं दो की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिये: 2×10=20

(क) "नजीबे, वाजिब सवाल है। होता यह है कि छोटी-बड़ी हकूमतें-सरकार अपने कारनामों-लड़ाइयों-फतेह यात्रियों को महफूज़ रखने के पूरे इंतज़ाम करती हैं। पूरा दफ़्तर रखती हैं। बाकी हमातड़-सायों के लिए यही काम उनकी मिरास कर लेती हैं। जिस खानदान का कारण ढंग-पज्ज हुआ, मिरास उनकी सात पीढ़ियों तक नाम दोहरा लेगी। सिलसिला चलता रहता है।"

(ख) शिक्षा के मैदान में भभ्भड़ मचा हुआ था। अब कोई यह प्रचार करता हुआ नहीं दीख पड़ता था कि अंपढ़ आदमी जानवर की तरह है। बल्कि दबी जबान से यह कहा जाने लगा था कि ऊँची तालीम उन्हीं को लेनी चाहिए जो उसके लायक हो, इसके लिए 'स्क्रीनिंग' होनी चाहिए। इस तरह से घुमा-फिराकर इन देहाती लड़कों को फिर से हल की मूठ पकड़ाकर खेत में छोड़ देने की राय दी जा रही थी।

(ग) अगर तुम्हारी किस्मत ही फूटी हो, और तुम्हें यहीं रहना पड़े तो अलग से अपनी एक हवाई दुनिया बना लो। उस दुनिया में रहो जिसमें बहुत से बुद्धिजीवी आँख मूँदकर पड़े हैं। होटलों और क्लबों में शराबखानों और कहवाघरों में, चंडीगढ़-भोपाल-बंगलोर के नवनिर्मित भवनों में, पहाड़ी आरामगाहों में, जहाँ कभी न खत्म होने वाले सेमीनार चल रह हैं।

(घ) किसानों की ओर से सरकार पर आते संकट को टालने का फिलहाल यही उपाए हो सकता है कि वे अपनी समस्या सांप्रदायिक झगड़ों में भूले रहें। यदि लोग और कांग्रेस आपस में नहीं लड़ेंगे तो अब सरकार के लिए इनमें से किसी एक को भी दबाना संभव नहीं रहा है।

2. 'राग दरबारी' में निहित स्वातन्त्र्योत्तर भारत में यथार्थ का विवेचन कीजिये। 10

3. 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' उपन्यास में मध्यवर्गीय जीवन की अभिव्यक्ति हुई हैं। इस कथन की सार्थकता पर विचार कीजिये। 10

4. परिवेश चित्रण की दृष्टि से 'ज़िन्दगीनामा' का मूल्यांकन कीजिये। 10

5. 'झूठा-सच' के प्रमुख चरित्र जयदेव पुरी की चारित्रिक विशेषताओं का विश्लेषण कीजिये। 10

6. निम्न में से किन्हीं दो पर टिप्पणियाँ लिखिये: 2×5=10

(क) 'राग दरबारी' में व्यंग्य

(ख) 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' का भाषिक शिल्प

(ग) 'ज़िन्दगीनामा' की अंतर्वस्तु

(घ) 'झूठा-सच' और सांझा संस्कृति

—x—